ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

गाँधी का शिक्षा दर्शन

डॉ. मधुभाई एम. हीरपरा

(व्याख्याता) (M.Ed., Ph. D)

प्रस्तावनाः

> "Gandhiji has secured a unique place in the galaxy of the great teachers who have brought fresh light in the field of education.”

संसार के अधिकांश लोग गांधी को एक महान राजनीतिरा ही मानते हैं परन्तु उन्होने देश की राजनीतिक उन्नति की अपेक्षा सामाजिक उन्नति का अधिक आवश्यक समजा । गांधीजी का विश्वास था कि दुषित समाज में किसी आदर्श राज्य की कल्पना नही की जा सकती। अतः उन्होने राजनीतिक क्रान्ति के साथ-साथ सामाजिक क्रान्ति को भी जन्म दिया जिसमें शिक्षा का प्रमुख स्थान था । उन्की प्रारम्भिक शिक्षा (Basic Education) योजना उनके शिक्ष-दर्शन को पवित्र करे एक शोषण विहीन समाज की स्थापना करना था । इस दृष्टि से गाँधीजी एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। डॉ. एम. एस ने ठीक ही लिखा है ।

"ग्रीन का कथन था - पोस्टालॉजी वर्तमान शिक्षा सिद्धांत तथा व्यवहार का प्रारम्भिक बिन्दु था । यक बात पश्चित्य शिक्षा के सम्बन्ध में सही हो सकती है। गाँधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारो का निष्पक्ष अध्यपन इस बात को सिध्ध करता है कि वे पूरव में शिक्षा-सिद्धांत और व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु है ।[१]"

शिक्षा का अर्थ (Meaning of Education)

गाँधीजी के अनुसार - साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न आरम्भ । यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष तथा स्त्री को शिक्षित किया जा सकता है।" उनका विश्वास था कि शिक्षा को बालक की समस्त शक्तियों का विकास करना चाहिये जिससे वह पुर्ण मानव बेन जाए। पूर्ण मानव का अर्थ बालक के व्यक्तित्व के पासे तत्व, शरीर, हृदय, मन तथा आत्मा के समुचित विकास से है। इस प्रकार गाँधीजी के अनुसार शिक्षा को बालक के शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक एवं आध्यात्मिम गुणों को उतेजित करके उसका समुचित विकास करना चाहिए जिससे वह जीवन के अन्तिम लक्ष्य (Ultimate Aim) "सत्य" (Satya) को प्राप्त कर शके । शिक्षा को परिभाषित करते हुए गाँधीजी के स्वयं लिखा है - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य है - बालक और मनुष्य केशरीर मस्तिष्क और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोतम गुणों को चहु मुखी विकास" [२]

शिक्षाका आधारभूत सिद्धांत (Basic Principles of Educational Philosophy)

गाँधीजी की शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित है.

(१) ७ से १४ वर्ष के बालको की शिक्षा निःशुलक तथा अनिवार्य होनी चाहिए।

(२) शिक्षा का माध्यम बालक की मातृभाषा होनी चाहिए।

(३) अंग्रेजी का बालक की शिक्षा मे कोई स्थान नही होना चाहिए।

(४) साक्षरता को शिक्षा नही कहा जा सकता है।

(५) शिक्षा से बालक में मानवीय गुणों का विकास करना चाहिए।

(६) शिक्षा बालक की समस्त शक्तियों का विकास उस समुदाय के अनुसार करे, जिसका वह सदस्य है।[३]

(७) शिक्षा को बालक के शरीर हृदय, मन तथा आत्मा का समाजस्यपूर्ण विकास करना चाहिए।

(८) शिक्षा किसी लाभ प्रद दस्तकारी से प्रारम्भ होनी चाहिए जिससे बालक अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर शके ।

(९) सभी प्रकार की शिक्षा किसी न किसी उत्पादन उद्योग के माध्यम से दी जानी चाहिए तथा इसका उस उद्योग से सह सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए ।

(१०) सभी विषयो की शिक्षा किसी स्थानीय माध्यम के द्वारा दी जानी चाहिए ।

(११) उद्योग ऐसा हो जिससे बालक को क्रिया द्वारा अनुभव प्राप्त हो शके ।[४]

(१२) किसी उद्योग के द्वारा शिक्षा को स्वापलंषी बनना चाहिए।

(१३) शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसे प्राप्त करके बालकों का को कोई ना कोई रोजगार मिल जाए।

(१४) स्कूल ऐसी होनी चाहिये जहां बालक अनेक प्रकार के प्रयोगों द्वारा नई-नई खोजें करता रहे ।

(१५) शिक्षा को उपयोगी नागरिको का निर्माण करना चाहिए।

गाँधीजी की शिक्षा के उदेश्य (Aims of Gandhian Education)

गाँधीजीने शिक्षा के उदेश्यो को दो निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है:

(अ) शिक्षा के तात्कालिक उदेश्य ।

(ब) शिक्षा का सर्वोच्च उदेश्य ।

(अ) गाँधीजी की शिक्षाके तात्कालिक उदेश्य (Immediate Aime of Gandhian Education)

(१) जीविकोपार्जन का उदेश्य: - गांधीजी चाहते थे कि प्रत्येक बालक नियमित शिक्षा प्राप्त करके किसी व्यवसायक द्वारा अपनी आर्थिक आवश्यकताओंकी पूर्ति स्वयं कर शके । अंत: उन्होने आत्मनिर्भर शिक्षा पर बल देते हुए बताया कि शिक्षा का प्रथम उदेश्य जीवकोपार्जन होना चाहिए जिससे प्रत्येक बालक अपने भावी जीवन में स्वावलंबी बन जाए। शिक्षा के इस उदेश्य से गांधीजीका तात्पर्य बालकों को मजदूर बनाना न था वे यह चाहते थे कि प्रत्येक बालक कमाते हुए कुछ सीखे और सीखते हुए कुछ कमाये ।

(२). सांस्कृत्तिक उदेश्य:- गांधीजी चाहते थे कि शिक्षा को भारतीय संस्कृत्ति का विकास करना चाहिए। अत: उन्होने सांस्कृतिक उदेश्य को भी भारतीय शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उदेश्य माना और कहा 'में शिक्षा के सांस्कृतिक पक्ष का उसके साहित्यिक पडी से अधिक महत्त्वपूर्ण समजता हुँ । संस्कृत्ति शिक्षा का आधार तथा विशेषांग है। अत: मानव के प्रत्येक व्यवहार पर संस्कृत्ति की छाप होनी चाहिए।

(३).पूर्ण विकास का उदेश्य :- गांधीजीने इस बात पर भी बल दिया कि शिक्षा को बालक की समस्त शक्तियों का सामंजस्यपूर्ण विकास करना चाहिए। अत: उन्होने पूर्ण विकास के उदेश्य पर बल देते हुअ ११ सितम्बर सन् ११३७-३३ को अपनी 'हरिजन' नामन पत्रिका में लिखा. 'सच्ची शिक्षा वह है जिसके द्वारा बालको के शारीरिक, मानसिक तथा आद्यात्मिक विकास को प्रोत्साहन मिले ।'

(४) नैतिक अथवा चारित्रिक विकास: - प्रसिध्ध शिक्षा शास्त्री हरबर्ट (Herbart) की भाँति गांधीजीका भी विश्वास था कि शिक्षा के उदेश्यो में चरित्र निर्माण महत्वपूर्ण उदेश्य है । इस संबंध में उन्होने अपनी

आत्मकथा में लीखा है - "मैंने सदैव हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र निर्माण को प्रथम स्थान दिया है तथा चरित्र निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है"।

(५) मुक्ति का उदेश्य :- गांधीजीका आदेश था - "सा विद्या या विमुक्तये" - इस आदर्श के अनुसार शिक्षा का उदेश्य व्यक्ति को मुक्ति दिलाना है। मुक्ति शब्द के विषय में गांधीजीने दो अर्थ लीए पहेले अर्थ में मुक्ति का तात्पर्य है वर्तमान जीवन की सभी प्रकारकी आर्थिक, राजनिक तथा मानसिक दासता से मुक्ति । गांधीजी चाहते थे की शिक्षा मानव को उक्त सभी प्रकास्की दासता से मुक्ति दिलायें। दूसरे अर्थ के अनुसार मुक्ति का तात्पर्य है आत्मा के सांसारिक बन्धनों से छुट्टी अर्थात् मानव में उच्चतर आत्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा उत्पन्न करना । संक्षेप में गांधीजी शिक्षा के द्वारा आता विश्वास के लिए आध्यात्मिक स्वतंत्रता दिलाना चाहते थे ।

(ब) शिक्षा का सर्वोच्च उदेश्य: - गांधीजी के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उदेश्य है - सत्य अथवा ईश्वर की प्राप्ति । शिक्षा के सारे उदेश्य इस उदेश्य के अधीन है । यश उदेश्य वही आत्मानुभूति का उदेश्य है जो भारतीय देशन में प्राचीन काल से चला आ रहा हैं। इस उदेश्य के अनुसार गांधीजी बालकको सत्य अथवा ईश्वर के साथ सक्षात्कार करना चाहते थे । उन्होंने लिखा है " आत्मा का विकास करना चरित्र का निर्माण करना है तथा व्यक्ति का ईश्वर और आत्मानुभूति के लिए प्रयास करने के योग्य बनाना है।

(५) शिक्षण पध्धति: (Method of Teaching) गांधीजी की शिक्षा के उद्देश्य प्रचलित शिक्षा के उदेश्यों से भिन्न थे । प्रचलित शिक्षा विषय प्रधान थी - गांधीजीने उस शिक्षण पध्धति को दोषपूर्ण समसते हुये स्थानिक उद्योगो को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु माना । वे चाहते थे कि बालकका किसी भी स्थानिक उद्योगो के माध्यम से शिक्षा दी जाए जिससे उसके शरीर, मन तथा आत्मा का विकास हो सके और वह भविष्य में अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके इस दृष्टि से गाँधीजी की शिक्षण पध्धतियों से भिन्न थी। उन्होंने अपनी शिक्षण पध्धति में निम्नलिखित सिध्धांतो को प्रमुख स्थान दिया।

(१) मस्तिष्क की शिक्षा के लिए शारिरिक अंगो के उचित प्रशिक्षण दिया जाए।

(२) लिखने से पहेले पढना सिखाया जाए।

(3) वर्णमाला के अक्षर सिखाने से पहले ड्रोइंग (चित्रकला) सिखाई जाए।

(४) करके सिखाने का अवसर प्रदान किये जाए।

(५) आनुभव के द्वारा सीखने का प्रोत्साहन दिया जाए।

(६) सीखने प्रक्रिया में समन्वय स्थापित किया जाए।

इस सिध्धांतो के अतिरिक्त बालक को स्थानीय उद्योग के माध्यम से पढाते समय गांधीजीने अपनी शिक्षण पध्धतिमें सहयोगी किया, नयोजन, यथार्थता, पहलकदमी तथा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के सिध्धांतो पर भी बल दिया।

(६) उपसंहार :- गांधीजी की शिक्षा का मूल्यांकन करना सहज है। उनकी शिक्षाक्षेत्रमें अद्वितीय देन हैं वे पहेले व्यक्ति थे जिन्होने भारतीय जीवन को द्रष्टि मे रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत की जिसको कार्य रूप में परिणीत करने से भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की सम्भावना है। उनके शिक्षादर्शन का अध्ययन करने से इस निष्कर्ष पर आते है कि गांधीजी हृदय से आदर्शवादी थे । वे अपने आदर्शो को वास्तविक तथा लाभप्रद एवं फलदायक बनाना चाहते थे । अतः उनके शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद तथा प्रयोजनवाद की जलक स्पष्ट रूप से दिखाई पडती है। ध्यान देने की बात है कि उनके शिक्षा दर्शन में उक्त विचारधाराओं में कोई विरोध नहीं है अपितु वे एक दूसरे की पूरक है। डॉ. एम एस. पटेलने भी इसी आसय की पृष्टि करते हुए ठीक ही लीखा है- "दार्शनिक के रूप में गांधीजी की महानता इस बात में है क उनके शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद और प्रयोजनवाद की मुख्य प्रवृतियाँ अलग और स्वतंत्र नहीं है। वरन् वे सब मिलझुलकर एक हो गई है, जिससे ऐसे शिक्षा-दर्शन का जन्म हुआ है जो आज की आवश्यक्ताओं के लिए उपयुक्त होगा तथा मानव आत्मा की सर्वस्व आकांक्षा ओ को सन्तुष्ट करेगा।

संदर्भो:

1. "Green remarked the Pestalozzi was the starting point of Modern educational theory and practice. This may be true so far as western education is concerned. An impartial study of Gandhiji's educational teachings will reveal that he is the starting point of modern educational theory anf practice in the east…. Dr. M. S. Patel
2. "By education I mean an all-round drawing out of the best in child and man body mind and spirit"......... M. K. Gandhi
3. "स्कूल को समाज का सच्चा प्रतिनिधि होना चाहिए-ज्होन ड्युई
4. "Education is a process involving continuous reconstruction and reorganization of experiences." -John Dewey
5. "The real greatness of Gandhiji as an educational Philosopher consists in the fact that the dominant tendencies of naturalism, idealism and pragmatism are not separate and independent in his philosophy but they fuse into a unity, giving rise to a theory of education. Which would suit the needs of the day and satisfy the reftiest aspirations of the human soul." -- Dr. M. S. Patel